'विश्व संवाद केन्द्र' के तत्त्वसवधान में आयोजित 'बाल चलचित्र महोत्सव' (Children Film Festival) में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

दिनांक– 07.09.2016, समय– 12:00 बजे दिन)

'विश्व संवाद केन्द्र' के तत्त्वावधान में आयोजित 'बाल चलचित्र महोत्सव' (बिपसकतमद थ्पसउ थ्मेजपअंस) के सुअवसर पर प्रमुख रूप से उपस्थित युवा विधायक श्री संजीव कुमार चौरसिया जी, डॉ॰ श्रवण कुमार जी, फिल्म समीक्षक प्रो॰ जयमंगल देव जी, फिल्म विधा में अभिरूचि रखने वाले प्रबुद्ध जन, मीडिया–प्रतिनिधिगण, प्यारे बच्चों, देवियों और सज्जनों !

आज आप 'बाल फिल्म महोत्सव' के इस आयोजन में पधारे हुए हैं। फिल्मों की लोकप्रियता इलेक्ट्रानिक माध्यमों के विस्तार के साथ–साथ बहुआयामी हुई है। टी॰वी॰ सेट्स, अपने लैपटॉप और यहाँ तक की अपने मोबाइल सेट्स पर भी युवा फिल्मों का आनंद उठाते हैं। सिनेमाघरों में तीन घंटे बैठकर फिल्में देखने की फुर्सत निकाल पाना आज जिन्दगी की भाग–दौड़ में काफी मुश्किल हो गया है। एक समय था, जब कुछ फिल्में एक–एक वर्ष तक एक ही सिनेमाघर में प्रदर्शित होती रह जाती थीं और तब भी दर्शकों की संख्या कमती नहीं थी। फिल्म–निर्माण पर तब बहुत खर्च नहीं होते थे तथा फिल्मांकन और कलाकारों के वेश–भूषे पर भी ज्यादा

व्यय नहीं होता था। ग्रामीण पृष्ठभूमि पर सामाजिक सरोकार से जुड़ी मार्मिक फिल्में बनती थीं, जो सार्थक और सोद्देश्य हुआ करती थीं। आज कलात्मक विकास के युग में काफी महँगी फिल्में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करते हुए बन रही हैं, फिर भी दर्शकों में वे काफी लोकप्रिय नहीं हो पा रहीं। जिन्दगी की तेज रफ्तार को ही फिल्मों की लोकप्रियता में आई कमी का एकमात्र कारण मान लिया जाये, तो यह हमारी भूल होगी। जिन्दगी की जद्दोजहद और सामाजिक सरोकार से जुड़ी हईं फिल्में आज भी पसंद की जाती हैं और उनको दर्शक संजीदगी से लेते हैं। सामाजिक समस्याओं पर सकारात्मक रूप से सोचते हुए सार्थक फिल्में यदि बनती हैं तो आज भी काफी संख्या में दर्शक उन्हें देखने सिनेमा–घरों तक पहुँच ही जाते हैं।

आज आयोजित इस 'बाल फिल्म महोत्सव' को भी इसी पृष्ठभूमि में मूल्यांकित किया जाना चाहिए। भारतीय फिल्मों में काफी ऐसे सफल बाल–कलाकार हुए हैं, जिनकी कला को परदे पर देख दर्शक आश्चर्यचकित हो जाया करते थे। फिल्मों में बाल–कलाकारों की भूमिका को लेकर भी शायद आज संजीदगी से नहीं सोचा जाता। सार्वजनिक जीवन में काफी व्यस्तता के कारण मैं फिल्म नहीं देख पाता हूँ; किन्तु पत्र–पत्रिकाओं में जो फिल्म–समीक्षाएँ छपती हैं और फिल्मों के बारे में जो समाचार

छपते हैं; उन्हें देख–पढ़कर मुझे ऐसा लगा है कि

बाल–समस्याओं को लेकर भी भारतीय सिनेमा जगत् में कई उच्च कोटि की फिल्मों का निर्माण हुआ है। 'तारे जमीं पर', 'बाल गणेश', 'रिटर्न ऑफ हनुमान', 'छोटा भीम', 'भूतनाथ', 'चिल्लर पार्टी ', 'मासूम', 'बम–बम बोले', 'आई एम कलाम', 'स्टेनली का डब्बा', 'दि ब्लू अम्ब्रेला' आदि बाल–फिल्में काफी सराही गई हैं। मुझे लगता है, सिनेमा घरों में 'बाल–फिल्म महोत्सव' का आयोजन प्रत्येक वर्ष एक सप्ताह के लिए अगर हो तथा इसमें स्कूली बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित करायी जाए, तो बाल–फिल्मों के प्रति लोगों की रूचि भी बढ़ेगी और ऐसे बाल–कलाकार भी अच्छी संख्या में उभरकर सामने आएँगे, जो आगे चलकर अच्छे अभिनेता बन सकेंगे।

यह प्रसन्नता का विषय है कि विश्व संवाद केन्द्र तथा चिल्ड्रेन फिल्म सोसायटी, इंडिया द्वारा तीन दिवसीय 'बाल चलचित्र महोत्सव' का आयोजन किया गया है। महानगरों में इस तरह का आयोजन आम बात है, लेकिन बिहार जैसे राज्य के लिए यह एक अनूठी पहल है। बिहार की समृद्ध संस्कृति को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि यहाँ समय–समय पर सार्थक एवं सकारात्मक फिल्मोत्सव का आयोजन हो। इस दिशा में 'बाल चलचित्र महोत्सव' एक सराहनीय पहल है। विश्व संवाद–केन्द्र

जैसी संस्थाओं से अपेक्षा है कि आने वाले समय में कला के इस आधुनिक रूप का लाभ समाज के सांस्कृतिक सुदृढ़ीकरण में हो सके। 'बाल चलचित्र महोत्सव' की महत्ता इस मायने में भी खास है कि इसमें सिनेमा के विविध आयामों से बच्चों का परिचय फिल्म विशेषज्ञों द्वारा कराया जा रहा है।

अमेरिका तथा यूरोप के देशों में सिनेमा कला को एक गंभीर विषय के रूप में शैक्षणिक पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है, परंतु भारत में सिनेमा जैसा प्रभावित माध्यम केवल मनोरंजन तक ही सीमित है। मुझे बताया गया है कि विश्व संवाद–केन्द्र, बिहार से संबंधित शोधपरक कार्य कर रहा है। इसकी एक इकाई पाटलिपुत्र सिने सोसायटी, सिनेमा संस्कृति के विकास के लिए सतत् प्रयास कर रही है। देश के कई शहरों में अनेक फिल्म समितियाँ कार्य कर रही हैं। कलकत्ता, तिरूवनंतपुरम् जैसे शहर में 50 से अधिक सोसायटी काम कर रही हैं। आज उसी का असर है कि वहाँ से कई प्रतिष्ठित फिल्मकार विश्व सिनेमा को प्राप्त हुए हैं। मेरी शुभकामना है कि पाटलिपुत्र सिने सोसायटी के प्रयास से आने वाले समय में बिहार से और भी कई फिल्मकार विश्व सिनेमा को प्राप्त हों।

आज के 'चिल्ड्रेन फिल्म फेस्टिवल' के सार्थक आयोजन के लिए मैं आयोजको को बधाई देता हूँ तथा इसकी समग्र सफलता की शुभकामना करता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द !

.....

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।